7. (क) लक्षणा शब्द-शक्ति पर टिप्पणी लिखिए । 4

(ख) 'सीधे रास्ते पर आ जाना।' में निहित लक्ष्यार्थ स्पष्ट कीजिए । 4

(ग) अभिधा शब्द-शक्ति को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । 4

8. (क) अंग्रेजी-हिंदी कोश का परिचय दीजिए । 4

(ख) हिंदी शब्दकोश में प्रविष्टि के लिए निम्नलिखित शब्दों को वर्णक्रमानुसार लिखिए : 4

धैर्य, नेता, बाहर, कल्पना, लज्जा, विराजना, नैतिक, आग।

This question paper contains **8+2** printed pages]

7/6/16

आपका अनुक्रमांक .....

2304

B.A. (Programme)/II/III **F-I**

HINDI LANGUAGE (A)—Paper II

हिंदी भाषा (क)-प्रश्नपत्र—II (B-135/C-135)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

टिप्पणी : प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं । तथापि ये अंक SOL के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे ।

1. निम्नलिखित अनुच्छेद आपके पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठों से लिए गए हैं । किन्हीं **दो** अनुच्छेदों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 8+8=16

(क) एक पैर रखता हूँ

कि सौ राहें फूटतीं,

व मैं उन सब पर से गुजरना चाहता हूँ;

बहुत अच्छे लगते हैं

उनके तजुर्बे और अपने सपने .....

सब सच्चे लगते हैं,

अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है

मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ,

जाने क्या मिल जाये !!

प्रश्न :

(*i*) उपर्युक्त काव्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए ।

(*ii*) ''सौ राहें फूटतीं'' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

(*iii*) कवि ने क्यों कहा कि 'सब सच्चे लगते हैं' ?

(*iv*) उपर्युक्त अंश का भाव लिखिए ।

(ख) बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है, जो जानता है कि वह क्या चाहता है और जो नहीं जानते हैं कि वे

रहता है । उसे यह भी ध्यान नहीं होता कि उसमें कितने फल या फूल लगेंगे और कब लगेंगे । उसका काम तो अन्दर-ही-अन्दर बढ़ना, बिना कुछ हानि-लाभ का अनुभव किए सबको छाया देना, फल देना और तृप्ति देना है । उसे इस चिन्ता से क्या मतलब कि कौन उसका फल खाएगा और कितने फल उसने लोगों को दिए । यही बात सच्चे परोपकारियों के साथ है । ऐसे व्यक्तियों के निर्माण के लिए कारखाने कायम नहीं हो सकते । वे जीवन के साथ हैं । वे जीवन के अरण्य में खुद-ब-खुद पैदा होते हैं । दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर वे खड़े हो जाते हैं उनका सादा जीवन भीतर-ही-भीतर होता है । उनका जीवन मुश्किल से कभी-कभी बाहर नजर आता है । उनका स्वभाव तो छिपे रहने का है ।

प्रश्न :

(*i*) उपर्युक्त अनुच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए ।

(*ii*) 'सच्चा परोपकारी' कौन है ?

(*iii*) उपर्युक्त गद्यांश का मूल भाव स्पष्ट कीजिए ।

5. हिंदी में अनुवाद कीजिए : 6

There are various values which sustain life. Honesty is one of them. Honesty fetches success, satisfaction and peace of mind. An honest person never deceives any one. In return, he gets love and respect. He is trusted by any one. Honestly however, does not mean honesty in money matters alone. It includes honesty in thoughts, words and deeds also. An honest man is always regular and punctual. He would never waste time. He is always straight and just. He has nothing to fear. Success and glory in life goes to those who practise honesty. All the great men of the world were honest in their dealings.

6. निम्नलिखित संवाद को कथांश में बदलिए : 6

रामगुलाम : ई, आय गया किसुनवा सरकार ।

दयाराम : देखो भाई किशुन, एक काम है तुम्हारे लिए।

किशुन : जो कहें कर सकित हैं ।

दयाराम : तुम हिंदी-विन्दी जानते हो ? पढ़ेहो न मैट्रिक तक!

किशुन : जी, जानित हैं।

दयाराम : देखो, बात यह है कि रात को हम एक छोटा-सा नाटक करने जा रहे हैं। हमारा एक अभिनेता बीमार हो गया है । छोटा-सा चोबदार का पार्ट है, तुम कर लो तो तुम्हें कुछ पान-पत्ते को पैसे दे दें। कभी नाटक-वाटक किया है तुमने ?

किशुन : जी ! गाँव के नाटक में कई बार पार्ट करि चुका अही।

दयाराम : तो बोलो !

किशुन : देइहैं का ?

दयाराम : अरे चार आने दे देंगे पान-पत्ते के लिए ।

किशुन : चार आने ! जोर की प्यास लगी हो बाबूजी और कोई कहे कि चार आने देंगे पानी पी कर दिखाओ! तो चार आने पर तो हम पनियों न पिएं । चवन्नी में आजकल का होय सकत है ?

(*ii*) 'बाजार का बाजारूपन' से लेखक का क्या अभिप्राय है ?

(*iii*) 'पर्चेजिंग पावर के गर्व' से लेखक क्या कहना चाहता है ?

(*iv*) बाजार की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

(ग) मन की आशाएँ और उमंगें जैसे बढ़ती हैं, वैसे ही मेरा नेता भी बढ़ने लगा । थोड़ा हुआ तो गाँव के स्कूल में ही उनकी शिक्षा प्रारम्भ हुई । यद्यपि मैं इस प्रबन्ध से विशेष सन्तुष्ट नहीं थी, पर स्वयं ही मैंने परिस्थिति बना डाली थी कि इसके सिवाय कोई चारा नहीं था । धीरे-धीरे उसने मिडिल पास किया । यहाँ तक आते-आते उसने संसार के सभी महान व्यक्तियों की जीवनियाँ और क्रांतियों के इतिहास पढ़ डाले । देखिए, आप बीच में ही ये मत पूछ बैठिए कि आठवीं का बच्चा इन सबको कैसे समझ सकता है ? यह तो एकदम अस्वाभाविक बात है । इस समय मैं आपके किसी भी प्रश्न का जवाब देने की मन:स्थिति में नहीं हूँ आप यह न भूलें कि यह बालक एक महान भावी नेता है ।

प्रश्न :

(*i*) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और रचनाकार का नाम लिखिए ।

(*ii*) 'मन की आशाएँ' और 'उमंगें' ने रचनाकार के मनोभावों को प्रबल किया है ? स्पष्ट कीजिए ।

(*iii*) रचनाकार के अनुसार 'जीवनी' और 'इतिहास' जैसे विषयों को कौन नहीं समझ सकता ?

(*iv*) ऊपर दिये उद्धरण का मूल भाव स्पष्ट कीजिए ।

2. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×3=9

(*i*) लेखक ने किन घटनाओं के माध्यम से मानवता की विजय का संदेश दिया है । (तूफान के विजेता)

(*ii*) 'मुझको न मिला रे कभी प्यार' कविता में व्यक्त उदात्त प्रेम की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

(मुझको न मिला रे कभी प्यार)

(*iii*) 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ' में व्यक्त हास्य-व्यंग्य पर प्रकाश डालिए । (पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ)

(*iv*) पारिभाषिक शब्दावली और सरल शब्दावली में क्या अंतर है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ।

(सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द)

(*v*) कपास से सूत कातने तक की प्रक्रिया का सरल भाषा में वर्णन कीजिए । (चरखवा चालू रहे)

3. किन्हीं **तीन** प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 3×4=12

(*i*) भाषा और बोली में अंतर

(*ii*) मानक लिपि

(*iii*) ब्रजभाषा का परिचय

(*iv*) संपर्क भाषा ।

4. अपठित गद्यांश के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 6

अपने आपको हर घड़ी और हर पल–सेवा में लगा देने का नाम ही परोपकार है। सच्चा परोपकारी अपने किए उपकारों को याद नहीं रखता । परोपकार करना उसकी प्रकृति ही हो जाती है । पेड़ तो जमीन से रस ग्रहण करने में लगा

क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति–शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं । न तो बाजार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं । वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं । जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं । कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी । इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं । मानो दोनों एक-दूसरे को ठगने की घात में हों । एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दीखता है और यह बाजार का, बल्कि इतिहास का सत्य माना जाता है ।

प्रश्न :

(*i*) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और रचनाकार का नाम लिखिए ।